विशाल मैदान /सिंधु गंगा ब्रह्मपुत्र का मैदान

Dr. Sabiha Khan

- यह मैदान प्रायद्वीपीय भारत एवं हिमालय प्रदेशों के मध्य सीमा का काम करता है।
- यह नवीनतम भूखंड है जिसकी उत्पत्ति हिमालय के उत्थान के बाद हुई है।
- सिंधु- गंगा- ब्रह्मपुत्र का प्रमुख भाग भौगोलिक दृष्टि से एक भूखंड है, परंतु इसका पश्चिमी भाग (सिंधु)पाकिस्तान एवं पूर्वी भाग (गंगा- ब्रह्मपुत्र) भारत में विद्यमान है।
- उत्तरी विशाल मैदान के नाम से संबोधित करते हैं।

क्षेत्रफल एवं विस्तार:

- यह विशाल मैदान विश्व का सबसे अधिक उपजाऊ एवं घनी जनसंख्या वाला भूभाग है।
- क्षेत्रफल- 7 लाख वर्ग किलोमीटर।
- मैदान की पूर्व से पश्चिम दिशा में लंबाई 2400 किलोमीटर।
- पश्चिम में इसकी चौड़ाई 500 किलोमीटर जबकि पूर्व में इसकी चौड़ाई 150 किलोमीटर तक है ।
- मैदान के अधिकांश भाग समुद्र तल से 150 मीटर से अधिक ऊंचा नहीं है।
- इस मैदान का विस्तार उत्तरी राजस्थान, हरियाणा ,पंजाब ,दिल्ली, उत्तर-प्रदेश ,बिहार, पश्चिम -बंगाल एवं असम राज्यों में है।
- मैदान का पश्चिमी भाग थार मरुस्थल के साथ मिल गया है

विशाल मैदान का वर्गीकरण

- इसकी सतह समतल एवं लगभग समान है।
- मैदान का पश्चिमी भाग सहारनपुर ,अंबाला, लुधियाना में स्थित है।
- इस भाग की औसत ऊंचाई 300 मीटर तक है। यह उच्च भूखंड गंगा एवं सिंधु नदियों के बीच जल विभाजक का कार्य करता है।
- सहारनपुर से कोलकाता तक इस मैदानी भाग की लंबाई लगभग 1500 किलोमीटर है।
- मैदान का औसत ढाल 20 सेंटीमीटर प्रति किलोमीटर है।
- पश्चिम से पूर्व की ओर जाने पर अथवा गंगा की उपरी घाटी से मध्य एवं निचली घाटी की ओर जाने पर ढाल और भी कम होता जाता है।
- वाराणसी से गंगा डेल्टा तक का ढाल का औसत और भी कम हो जाता है, जो कि लगभग 15 सेंटीमीटर प्रति किलोमीटर हो जाता है।

मिट्टी की विशेषता एवं ढाल के आधार पर विशाल मैदान का वर्गीकरण इस प्रकार किया गया है :-

1. भाभर प्रदेश-

- जहां हिमालय पर्वत और गंगा के मैदान मिलते हैं।
- हिमालय पर्वत से निकलने वाली जलधाराएं अपने साथ चट्टानी टुकड़ों को साथ ले आकर साथ ले आती है और पर्वतीय क्षेत्रों में पर्वत पदीय क्षेत्र में लाकर एकत्रित कर देती है।
- यह संपूर्ण प्रदेश कंकड़ -पत्थरों से गहराई तक ढक जाता है।
- यह हिमालय के पथरीले ढाल हैं, जहां आमतौर से नदियों का जल ढेर के नीचे प्रवाहित होता है और नदियां प्राय विलुप्त सी नजर आती है।
- केवल बड़ी नदियों का जल ही धरातल पर प्रवाहित होता दिखाई देता है।

2. तराई प्रदेश :

- भाबर प्रदेश के दक्षिण में ,समानांतर विस्तृत है।
- इस प्रदेश की चौड़ाई 15 से 30 किलोमीटर।
- भाबर प्रदेश में धरातल के नीचे बहने वाला जल तराई प्रदेश में पुनः धरातल पर बहता हुआ दिखाई देने लगता है ।
- यह निम्न समतल मैदान है ,जहां नदियों का पानी इधर-उधर फैल कर दलदली क्षेत्रों का निर्माण करता है ।
- यहां नदियों का कोई निश्चित मार्ग नहीं होता है ।
- प्रदेश की रचना बारीक कंकड़ पत्थर रेत एवं चिकनी मिट्टी से होती है ।
- इस प्रदेश में वनों की अधिकता होती है एवं यह मानव के आवास के योग्य नहीं है परंतु वर्तमान में वनों को साफ करके खेती में प्रयोग किया जा रहा है एवं मानव की बसावट प्रारंभ हो गई है।

3.कांप मैदान

- विशाल मैदान का अधिकांश भाग इसी प्रदेश के अंतर्गत आता है, इसे दो भागों में वर्गीकृत किया गया है:-
- **3.A बांगर प्रदेश**-
  - यह मैदान का वह ऊंचा भाग है जहां सामान्य रूप से नदियों की बाढ़ का जल नहीं पहुंच पाता है।
  - इस प्रदेश में पुरानी कांप मिट्टियां पाई जाती है जिसमें कंकड़ पत्थर मिलते हैं।
  - कहीं-कहीं ऊंचाई 30 मीटर तक पाई जाती हैं।
  - स्थलों में निम्न भागों में अपरदन के कारण मिट्टी का कटाव हो जाता है और धरातल उबर खाबर नजर आता है।
  - सतलज का मैदान और गंगा का उपरी मैदान मैं बांगर प्रदेश की अधिकता पाई जाती है।
  - नदियों के दोआब क्षेत्र में इस प्रकार का प्रदेश विस्तृत है।

3.B खादर प्रदेश

- वह भूभाग जहां नदियों की बाढ़ का पानी आसानी से पहुंचता है।
- इसे नदियों के बाढ़ का मैदान या कछारी मैदान भी कहते हैं।
- प्रतिवर्ष बाढ़ का पानी अपने साथ नवीन मृदा को इस प्रदेश में संगठित करता है।
- इस प्रदेश में बहुत गहराई तक मृदा का संगठन पाया जाता है।
- भूगर्भिक जल भी कम गहराई पर आसानी से उपलब्ध होता है।
- प्रदेश की मृदा कृषि के लिए अत्यंत उपजाऊ है।
- विशाल मैदान का यह भाग अनुकूलतम दशाओं के कारण सर्वाधिक जनसंख्या वाला भाग है।

4.डेल्टाई प्रदेश:

- डेल्टा के मैदानों का निर्माण नदी के मुहाने पर होता है, जहां पर वह समुद्र से जाकर मिल जाती है ।
- गंगा एवं ब्रह्मपुत्र का डेल्टा भारत एवं बांग्लादेश में विस्तृत है।
- डेल्टा का पुराना भाग भारत में जो कि लगभग स्थिर है, जबकि नवीन भाग बांग्लादेश में है जो अभी निर्माण अवस्था में है।
- वास्तव में डेल्टाई प्रदेश खादर प्रदेश का ही विस्तार क्षेत्र है।
- इस प्रदेश में मैंग्रोव वनस्पति पाई जाती है।
- यह क्षेत्र दलदली है , जूट एवं चावल की कृषि के लिए अत्यंत उपजाऊ है।

रेह:

- बांगड़ क्षेत्रों में जहां सिंचाई कार्यों की अधिकता होती है, वहां कहीं-कहीं भूमि पर एक नमकीन सफेद बिछी हुई पाई जाती है, जिसे रेह /कल्लर नाम से पुकारते हैं।
- सामान्यतया यह अनउपजाऊ प्रदेश है।
- उत्तर प्रदेश और हरियाणा के शुष्क भागों में इस

भूड़:

- बांगड़ प्रदेश के वह मृदा प्रदेश जहां आवरण क्षय के फलस्वरूप उपरी मुलायम मृदा नष्ट हो गई है तथा कंकड़ीली उच्च भूमि शेष रह गई है, ऐसी भूमि को भूड़ कहते हैं।
- गंगा एवं रामगंगा नदियों के प्रवाह क्षेत्र में इस प्रकार की भूमि विशेष रूप से पाई जाती है।

विशाल मैदान का उप विभाजन :

धरातलीय विशेषताओं के आधार पर विशाल मैदान को निम्नलिखित उप विभागों में वर्गीकृत किया गया है:-

1. पंजाब -हरियाणा मैदान :

- **इसे सतलज -यमुना विभाजक भी कहते हैं।**
- **इसका विस्तार पंजाब, हरियाणा और दिल्ली राज्यों में है।**
- **इस प्रदेश में सतलज ,व्यास एवं रवि नदियां बहती है ।प्राचीन काल में सरस्वती , द्रव्यवती नदियां बहती थी।**
- **चौरस मैदान का क्षेत्रफल 1.75 लाख वर्ग किलोमीटर है।**
- **उत्तर पूर्व से दक्षिण पश्चिम दिशा में इसकी कुल लंबाई 640 किलोमीटर है, जबकि पश्चिम से पूर्व दिशा वे इसकी चौड़ाई 300 किलोमीटर है।**
- **इस मैदान की औसत ऊंचाई 250 मीटर है।**
- **इसका ढाल उत्तरी पूर्व से दक्षिण पश्चिम की ओर कम होता जाता है।**

- इस मैदान में दोआब क्षेत्र पाए जाते हैं:-
  - रवि और व्यास नदियों के बीच -बारी दोआब
  - व्यास और सतलज नदी के बीच बिस्त दोआब
- सतलुज के दक्षिण की ओर के भूभाग को घग्घर का मैदान कहते हैं जो कि अपेक्षाकृत ऊंचे मैदान है।
- मैदान का दक्षिणी भाग हरियाणा के मैदान के नाम से जाना जाता है।
- वर्तमान समय में सिंचाई सुविधाओं के कारण यह मैदान कृषि योग्य हरा भरा है।

2. राजस्थान का मैदान:

- इस मैदानी प्रदेश का कुल क्षेत्रफल 1.75 लाख वर्ग किलोमीटर है।
- यह अरावली पहाड़ियों के पश्चिमी भाग में विस्तृत है।
- इस प्रदेश में मरुस्थलीय एवं बांगड़ क्षेत्र भी सम्मिलित है।
- मरुस्थलीय बालू प्रदेश मारवाड़ मैदान का अंग है ,जहां पर नीस ,सिस्ट एवं ग्रेनाइट की चट्टाने पाई जाती है।
- दक्षिणी- पश्चिमी मरुस्थलीय भाग में पवन अनुवर्ती टीले पाए जाते हैं , जबकि दक्षिण- पूर्वी भागों में अनुप्रस्थ बालुका स्तूप एवं बरखान पाए जाते हैं।

- अरावली के पश्चिम भाग में उत्तर - पूर्व से दक्षिण - पश्चिम दिशा में स्टेपी भूमि का विस्तार पाया जाता है, जिसकीपश्चिमी सीमा 25 सेंटीमीटर सम वर्षा रेखा तक है।
- यहां की प्रमुख नदी लूनी हैं, जोकि दक्षिण- पश्चिम में प्रवाहित होती हुई कच्छ के रण में गिरती है।
- प्रदेश में अनेक नमकीन जिले पाई जाती है : सांभर ,डीडवाना ,लूणकरणसर, कुचामन ,डेगाना

3.गंगा का मैदान:

- यह मैदान उत्तर - प्रदेश ,बिहार, पश्चिम- बंगाल राज्य में विस्तृत है।
- इस मैदान का क्षेत्रफल 3.57 लाख वर्ग किलोमीटर है।
- इसका ढाल उत्तर- पश्चिम से दक्षिण -पूर्व की ओर है।
- गंगा यहां की प्रमुख नदी है।
- दाएं किनारे पर गंगा की प्रमुख सहायक नदियां यमुना एवं सोन है जबकि बाएं किनारे पर घाघरा, गंडक, कोसी प्रमुख सहायक नदियां हैं।
- इस मैदान में नदियों का जाल फैला हुआ है, जो कि प्रतिवर्ष नवीन मृदा का निक्षेप करती हैं।
- भू- आकृतिक दृष्टि से बांगर एवं खादर इसके उपविभाग हैं।

गंगा का मैदान को तीन भागों में बांटा गया है:-

3.A- ऊपरी गंगा का मैदान:

- **इस मैदान की उत्तरी सीमा शिवालिक पहाड़ियां, दक्षिणी सीमा प्रायद्वीपीय पठार द्वारा निश्चित होती है।**
- **पश्चिम में यमुना नदी इसकी सीमा बनाती है तथा पूर्व में 100 मीटर समोच्च रेखा द्वारा यह निश्चित है।**
- **यह मैदान समुद्र तल से 100 से 300 मीटर तक ऊंचा है।**
- **यहां की प्रमुख नदियां यमुना, गंगा, रामगंगा, शारदा ,गोमती, घाघरा है।**

3.B - मध्य गंगा का मैदान:

- इसकी पश्चिमी सीमा 100 मीटर समोच्च रेखा द्वारा तय है, जो इलाहाबाद फैजाबाद रेल मार्ग का अनुसरण करती है।
- उत्तरी- पूर्वी भाग 75 मीटर तथा दक्षिण- पूर्वी भाग 30 मीटर समोच्च रेखा द्वारा निर्धारित है।
- यहां की प्रमुख नदियां- घाघरा, गंडक, कोसी है।
- शिवालिक की तीव्र ढाल, नदियों की अधिकता के कारण यह प्रदेश बाढ़ से ग्रस्त है।
- इस मैदानी भाग में नदियों का विसर्पित रूप पाया जाता है।
- मैदान में धनुष आकार झीलें एवं नदी तटबंध मिलते हैं।
- यहां खादर भूमि की अधिकता ।
- होने के कारण यह भूभाग अत्यंत उपजाऊ है।

3.B - निम्न गंगा का मैदान:

- मैदानी भाग में उत्तरी पहाड़ी क्षेत्रों एवं पश्चिम में स्थित पुरुलिया जिले को छोड़कर संपूर्ण पश्चिम बंगाल सम्मिलित है।
- मैदानी भाग हिमालय की तलहटी से लगाकर गंगा के डेल्टा तक फैला हुआ है।
- मैदान का उत्तरी भाग तीस्ता ,टोंरसा नदियों द्वारा सिंचित है।
- दक्षिणी भाग में गंगा के पुराना डेल्टा का विस्तार है और इसके भी दक्षिणी भाग में नवीन का मृदा का डेल्टाई भाग है ,जो कि बंगाल की खाड़ी तक विस्तृत है।
- निम्न गंगा का यह मैदान समुद्र तल से केवल 50 मीटर ऊंचा है।
- समुद्री जवार इसके अधिकांश भाग को जल के द्वारा ढक लेते हैं जिसके कारण दलदली भूमि का निर्माण होता है और वहां मैंग्रोव वनस्पति पाई जाती है।
- डेल्टा क्षेत्र में उच्च भूभाग को सर कहते हैं, जो कि मानव - बस्ती के रूप में प्रयोग किए जाते हैं। उच्च भागों के बीच में निम्न भूमि पाई जाती है ,जिन्हें बिल कहते हैं यह निम्न भूमिया जल द्वारा भरी रहती है।

4. ब्रह्मपुत्र का मैदान:

- इस मैदानी भाग को असम घाटी के नाम से भी जाना जाता है।
- भू भाग हिमालय पर्वत श्रेणी एवं मेघालय पठार के बीच में स्थित सकरा व लंबा मैदान है।
- इसकी कुल चौड़ाई केवल 80 किलोमीटर है।
- ब्रह्मपुत्र एवं उसकी सहायक नदियों द्वारा घाटी में भारी मात्रा में मिट्टी लाकर एकत्र कर दी है, जिसके कारण नदी में द्वीप निर्मित हो गए हैं।
- घाटी का पूर्वी भाग 130 मीटर जबकि पश्चिमी भाग केवल 30 मीटर ऊंचा है।
- इस मैदानी भाग में ढाल का औसत 12 सेंटीमीटर प्रति किलोमीटर है। दाल की दिशा उत्तर पूर्व से दक्षिण पश्चिम की ओर है।
- उत्तरी सीमा पर तराई व अर्ध तराई क्षेत्र पाए जाते हैं।

धन्यवाद

Disclaimer: The content displayed in the PPT has been taken from variety of different websites and book sources. This study material has been created for the academic benefits of the students alone and I do not seek any personal advantage out of it